

Chapter-7: जन आन्दोलनों का उदय

- इस अध्याय के शुरुआती चित्र पर ध्यान दीजिए आप इसमें क्या देख रहे हैं ? गाँव की महिलाओं ने सचमुच पेड़ों को अपनी बाँहों में बांध रखा है क्या ये लोग कोई खेल खेल रहे हैं या, ये लोग कोई पर्व-त्यौहार मना रहे हैं ? दरअसल चित्र में नजर आ रहे लोग ऐसा कुछ नहीं कर रहे हैं यहाँ जो तसवीर दी गई है उसमें सामूहिक कार्रवाई की एक असाधारण घटना को दर्ज किया गया है यह घटना 1973 में घटी जब मौजूदा उत्तराखंड के एक गाँव के स्त्री-पुरुष एकजुट हुए और जंगलों की व्यावसायिक कटाई का विरोध किया
- जंगलों की कटाई का कोई भी ठेका बाहरी व्यक्ति को नहीं दिया जाना चाहिए और स्थानीय लोगों का जल जंगल जमीन जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर कारगर नियन्त्रण होना चाहिए लोग चाहते थे कि सरकार लघु- उद्योगों के लिए कम कीमत की सामग्री उपलब्ध कराए और इस क्षेत्र के परिस्थितियों संतुलन को नुकसान पहुंचाए बगैर यहाँ का विकास सुनिश्चित करे
- चिपको आन्दोलन में महिलाओं ने सक्रिय भागीदारी की यह आन्दोलन का एकदम नया पहलू था इलाके में सक्रिय जंगल कटाई के ठेकेदार यहाँ के पुरुषों को शराब की आपूर्ति का भी व्यवसाय करते थे महिलाओं ने शराबखोरी की लत के खिलाफ भी लगातार आवाज उठी इससे आन्दोलन काका दायरा विस्तरीत हुआ और उसमें कुछ और सामाजिक मसले आ जुड़े
- जन आन्दोलन कभी सामाजिक तो कभी राजनीतिक आन्दोलन का रूप ले सकते हैं और अक्सर ये आन्दोलन दोनों ही रूपों के मेल से बने नजर आते हैं लेकिन हम जनते हैं कि औपनिवेशिक दौर में सामाजिक-आर्थिक मसलों पर भी विचारो मथन चला जिससे अनेक स्वतंत्र सामाजिक आन्दोलन का जन्म हुआ जैसे -जाति प्रथा विरोधी आन्दोलन किसान सभा आन्दोलन और मजदूर संगठनों के आंदोलन ये आंदोलन बीसवी सदी के शुरुआती दशकों में अस्तित्व में आए
- आजादी के बाद के शुरुआती सालों में आंध्रप्रदेश के तेलगाना क्षेत्र के किसान कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में लामबंद हुए काश्तकारों के बीच जमीन के पुनर्वितरण की मांग की आंध्रप्रदेश पश्चिम बंगाल और बिहार के कुछ भागों

में किसान तथा खेतिहर मजदूरों ने मार्क्सवादी - लिनिन्वादी कम्युनिस्ट पार्टी के कार्य के कार्यकर्ताओं के नेत्रित में अपना विरोध जरी रखा

- सतर' और अस्सी 'के दशक में समाज के कई तबको का राजनीतिक दलों के आचार -व्यवहार से मोहभंग हुआ इसका तत्कालीन कारण तो यही था कि जनता पार्टी के रूप में गैर -कांग्रेसवाद का प्रयोग कुछ खास नहीं चल पाया और इसकी असफलता से राजनीतिक अस्थिरता का माहौल भी कायम हुआ था लेकिन अगर कारणों की खोज जरा दूर तक करे तो पता चलेगा कि सकारो की आर्थिक नीतियों से भी लोगों का मोहभंग हुआ था
- आजादी के शुरुआती 20 सालों में अर्थव्यवस्था के कुछ क्षेत्रों में उल्लेखनीय स्न्वीदी हुई , लेकिन इसके इसके बावजूद गरीबी और असमानता बड़े पैमाने पर बरकरार रही स्न्वीरिदे के लाभ समाज के हर तबके को समान मात्रा में नहीं मिले
- दलित हितों की दावेदारी के इसी क्रम में महाराष्ट्र में 1972 में दलित युवाओं का एक संघठन दलित पैथर्स बना आजादी के बाद के सालों में दलित समूह मुख्यतया जाती-आधारित असमानता और भौतिक साधनों के मामले में अपने साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ लड़ रहे थे
- सतर के दशक से भारतीय समाज में कई तरह के असंतोष पैदा हुआ यहाँ तक कि समाज के जिन तबको को विकास में कुछ लाभ हुआ था उनमें भी सरकार और राजनीतिक दलों के प्रति नाराजगी थी 1988 के जनवरी में उत्तरप्रदेश के एक शहर मेरठ में लगभग बीस हजार किसान जमा हुए किसान सरकार द्वारा बिजली की डर में की गई बढ़ोतरी का विरोधी कर रहे थे
- तीसरी अध्याय में आपने पढ़ा था कि सरकार ने जब हरित क्रांति की नीति अपनाई तो 1960 के दशक के अंतिम सालों से हरियाणा पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों को फायदा होना शुरू हो गया 1980 के दशक के उत्तरार्ध से भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के प्रयास हुए और इस कर्म में नगदी फसल के बाजार को संकट का सामना करना पड़ा
- 1990 के दशक के शुरुआती सालों तक बीकेयू ने अपने को सभी राजनीतिक दलों से दूर रखे थे यह अपने सदस्यों के संख्या बल के डीएम पर राजनीतिक में एक दबाव समूह की तरह सक्रिय था 1980 के दशक के

मध्यवर्ती वर्षों में आर्थिक उदारीकरण की शुरूआती हुई तो बाध्य होकर मछुआरो के स्थानीय संगठनों ने अपना एक राष्ट्रीय मंच बनाया

- नेशनल फिशवक्र्स फोरन ने 1997 में केंद्र सरकार के साथ अपनी पहली कानूनी लड़ाई लड़ी और इसमें उसे सफलता मिली इस कर्म में इसके कामकाज ने एक ठोस रूप भी ग्रहण किया पूरे 1990 के दशक में एनएफएफ ने केंद्र सरकार के साथ अनेक कानूनी लड़ाईया लड़ी और सार्वजनिक संघर्ष किया हैं
- वर्ष 1992 के सितम्बर और अक्टूबर माह में इस तरह की खबरे तेलुगु प्रेस में लगभग रोज दिखती थी गाँव का नाम बदल जाता खबर वैसे ही होती ग्रामीण महिलाओ ने शराब के खिलाफ लड़ाई छेड़ रखी थी
- आठवें दशक के प्रारंभ में भारत के मध्य भाग में स्थित नर्मदा घाटी में विकास परियोजना के तहत मध्य प्रदेश गुजरात और महाराष्ट्र से गुजरने वाली नर्मदा और उसकी सहायता नदियों पर 30 बड़े 135 मझोले तथा 300 छोटे बांध बनाने का प्रस्तवा रखा गया